॥ स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दना

प्रकाशक :

सरस्वती शिशु मन्दिर प्रकाशन

निरालानगर, लखनऊ–७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
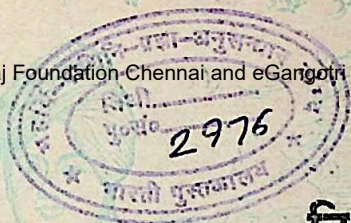
निवेदन

किसी व्यक्ति पर जिस प्रकार के अच्छे बुरे संस्कार उसके वचपन में पड़ते हैं वही उसके भावी व्यक्तित्व के आधार बनते हैं और उन्हीं से मिलने वाली प्रेरणा और शक्ति उसे जीवन भर उसकी जीवन-यात्रा में सफल होने में सहायता करती है। स्वामी विवेकानन्द के मत में मनुष्य के मन और मस्तिष्क को भव्य संस्कारों के द्वारा आदर्श मानव के रूप में साधना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। उपनिषद् के अनुसार हम जो सोचते हैं वैसा ही बोलते हैं और उसी के अनुसार आचरण करते हैं। 'वन्दना' के द्वारा शिशु के मन में श्रेष्ठ एवं उदार मूल्यों के प्रति निष्ठा एवं श्रद्धा का निर्माण करना हमारा उद्देश्य है। सर्वप्रथम शिशुओं के कोमल अन्तःकरण में ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के प्रति सच्ची श्रद्धा वन्दना के द्वारा निर्माण होगी। शिशु असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर अपनी विद्या और विवेक के बल से अग्रसर होने की शक्ति मिलेगी।

प्रातः स्मरण के द्वारा शिशु के मन में मातृभूमि के प्रति भक्ति-भावना जगेगी तथा परमेश्वर और उनकी विभूतियों के स्मरण से आत्मविश्वास और आशावाद से उसका हृदय सामर्थ्य ग्रहण करेगा। स्वदेश को महान् और समृद्ध बनाने वाले अपने प्रतापी पूर्वजों-महापुरुषों और नारी-रत्नों के स्मरण से अपनी परम्परा, संस्कृति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

और धर्म के प्रति श्रद्धा, स्वाभिमान और बलिदान के भाव जाग्रत होंगे।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता, रामायण और संस्कृत के सुभाषित बड़ी प्रेरणा और स्फूर्ति देने वाले हैं। पंचम कक्षा के शिशुओं को उन्हें कंठाग्र कर लेना चाहिये। संकलन करते समय ऐसे पद्य चुने गये हैं जिनका पूरा अभिप्राय चाहे शिशुओं को इस आयु में समझ में भी न आये, तो भी उनसे मिलने वाला पाठ और प्रेरणा उनकी चेतना का अभिन्न अङ्ग बन जाय और वह उन्हें उनके भावी जीवन में सुख-दुःख, जय-पराजय, आशा-निराशा आदि के क्षणों में मार्ग-दर्शन कर सके। शिशु बड़ा होने के बाद अपना और दूसरों का मार्गदर्शन करने योग्य नेतृत्व के गुणों से सुसज्जित हो जायें-यही हमारी कामना है।

—कृष्णचन्द्र गांधी

शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, उत्तर प्रदेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

समाज की शिक्षा संस्थाओं को उसके सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण, विकास और विस्तार का वास्तविक केन्द्र माना जाता है। नन्हें-मुन्ने शिशु इन संस्थाओं के हाथों में राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। शिक्षा शिशुओं में अपने समाज की संस्कृति, जीवन-दर्शन और अध्यात्म के अनुरूप अच्छे संस्कारों का निर्माण करें, उनके सर्वांगीण विकास का साधन बने और उन्हें चरित्रवान्, शालीन, विनीत और उपयोगी नागरिक बनाते हुए उनमें रचनात्मक क्षमताओं का विकास करे, इस प्रकार की, 'सोद्देश्य शिक्षा' ही सच्ची भारतीय शिक्षा कही जा सकती है।

शिक्षा के माध्यम से ही मानव-समाज का संचित ज्ञान उसके शिशु, बाल, किशोर और तरुण व्यक्तियों में संचालित होता है। भारतीय धर्म और संस्कृति, आदर्शों और परम्पराओं के ज्ञान के साथ ही आधुनिक आवश्यकताओं और भविष्य की संभावनाओं के विषय में भी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विवेकपूर्ण विचार कल्पना और कार्य करने की क्षमता निर्माण करना हमारा उद्देश्य है। हमारे शिशु बड़े होकर राष्ट्रीय भावनाओं और देशभक्ति से ओत-प्रोत होकर देश के प्रबुद्ध, समर्थ और जागरूक नागरिक बने, भारतीय जीवन-दर्शन के उदार मूल्यों के अनुसार आचरण करते हुए समाज सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में सार्थक योगदान करें भविष्य की चुनौतियों को समझने और सुलझाने में समर्थ हों और पुरानी रूढ़ियों और सड़े-गले अन्ध-विश्वासों को दूर कर नये जीवन-मूल्यों का निर्माण करें। श्रम को जन-जीवन में फिर से प्रतिष्ठा दिलवायें। सामाजिक न्याय, उदारता और सहिष्णुता के गुणों से युक्त सच्ची भारतीय राष्ट्रीयता का विकास करें जिसमें मातृभूमि, राष्ट्रीय सम्पत्ति और राष्ट्रीय आदर्शों की रक्षा के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को बलिदान कर देने की भावना प्रबल हो। प्रान्त, भाषा, जाति वर्ग आदि की संकीर्ण भावनाओं को छोड़ कर राष्ट्रीय एकता और संगठन के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

द्वारा ऐसे भारतीय राष्ट्र का निर्माण हो सके जो सब प्रकार से समन्वयात्मक और प्रगतिशील हो ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशुओं में राष्ट्रीय भावना, स्वाभिमान, आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता, उदार और असंकुचित दृष्टिकोण, सच्चरित्रता, सेवा भावना, अनुशासन और प्रगल्भ लौहपुरुष की सी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलित क्षमता उत्पन्न करना हमारा पवित्र उद्देश्य है । इनके द्वारा ही व्यक्ति समाज, राष्ट्र और विश्व सभी का प्रगतिशील विकास और कल्याण सम्भव है । स्वामी विवेकानन्द ने कहा था—"भारत माँ सो रही है । उसे सही शिक्षा द्वारा जगाना है, जिससे उसकी संस्कृति प्राचीन समय से भी उज्ज्वल होकर मानव-कल्याण और विश्व संस्कृति के निर्माण के पथ की ओर अग्रसर हो सके ।" इस दिशा में गत अनेक वर्षों से 'शिशु-शिक्षा प्रबन्ध समिति, उत्तर प्रदेश' ने सारे प्रदेश में स्थान-स्थान पर 'सरस्वती शिशु मन्दिरों' की स्थापना करके सोद्देश्य शिक्षा के द्वारा भारतीय शिक्षा-पद्धति के पुनरुद्धार का कार्य प्रारम्भ किया है । इसके लिए नये यथोचित रचनात्मक पाठ्यक्रम तैयार किये गये हैं । शिशु-मन्दिरों के आचार्य-गण मिशनरी-भावना से मधुर गुरु शिष्य सम्बन्धों के वातावरण में इस पद्धति को सर्वथा विपरीत परिस्थितियों में भी चला रहे हैं, इनके लिए वे बधाई के पात्र हैं । राष्ट्र के नव-निर्माण में उनका यह योगदान भावी भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जायगा । उन्हीं के कर कमलों में तथा उन्हीं के नन्हे-मुन्ने भैयाओं और बहिनों के लिए यह छोटी सी कृति 'वन्दना' समर्पित है । उनके सुझाव और संशोधन सादर आमन्त्रित हैं, जिनके मार्ग-दर्शन में अगले संस्करण में इसका यथोचित परिष्कार किया जा सकेगा । यदि इस सेवा के द्वारा आपको थोड़ा-बहुत भी सन्तोष हुआ तो सम्पादक अपने परिश्रम को सफल समझेगा ।

रघुवीर शास्त्री
एम० ए०, पी० एच० डी०
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय
(अलीगढ़)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

हमारी प्रार्थना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।१।।

जो विद्या की देवता भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में बीणा-दण्ड शोभायमान है तथा जिन्होंने श्वेत कमलों पर आसन ग्रहण किया है, ब्रह्मा, विष्णु और देवता जिनकी सदैव वन्दना करते हैं वही सम्पूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली हमारी रक्षा करें ।।१।।

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।२।।

शुक्लवर्ण वाली, सम्पूर्ण चराचर जगत् में व्याप्त, आदिशक्ति, परब्रह्म के विषय में किये गये विचार एवं चिन्तन के सार रूप परम उत्कर्ष को धारण करने वाली, सभी भयों से अभयदान देने वाली, अज्ञान के अँधेरे को मिटाने वाली, हाथों में वीणा, पुस्तक और स्फटिक की माला धारण करने वाली और पद्मासन पर विराजमान् बुद्धि प्रदान करने वाली, सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत, भगवती शारदा (सरस्वती देवी) की मैं वन्दना करता हूँ ।।२।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती-वन्दना

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे । अम्ब विमल मति दे ।।
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे । वह बल विक्रम दे ।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे । अम्ब विमल मति दे ।।

साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग-तपोमय कर दे,
संयम सत्य स्नेह को भर दे,
स्वाभिमान भर दे । स्वाभिमान भर दे ।।१।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे । अम्ब विमल मति दे ।।

लव, कुश, ध्रुव, प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम,
सीता, सावित्री, दुर्गा माँ,
फिर घर-घर भर दे । फिर घर-घर भर दे ।।२।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे । अम्ब विमल मति दे ।।

※ भारतमाता की जय ※

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति-पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवी सभी शान्ति एवं कल्याण देने वाले हों। सभी जल औषधियाँ और वनस्पतियाँ हमें सुख-शान्ति प्रदान करें। सभी देवता, परब्रह्म परमेश्वर और सभी सम्मिलित रूप में शान्ति देने वाले हों। आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की शान्ति ही शान्ति हो। वह शान्ति हममें (मा) सदैव वृद्धि को प्राप्त हो ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्रातःस्मरणम्

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातःकाल उठकर आत्महित की कामना से प्रातःस्मरण का पाठ करने से सर्वशक्तिमान् परमेश्वर में विश्वास अपनी मातृभूमि और राष्ट्र के प्रति भक्ति और प्रेम, तथा अपने प्रतापी पूर्वजों के स्मरण से जगे आत्म गौरव और स्वाभिमान के पवित्र भाव मन में आते हैं। जिसके कारण प्रफुल्लता, स्फूर्ति, दृढ़ता, उल्लास और उत्साह के साथ अपने कर्तव्य के पथ पर बढ़ता हुआ मनुष्य नई-नई सफलतायें अवश्य प्राप्त करता है। दिन भर मन प्रसन्नता और उमंग से भरा रहता है।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥१॥

प्रातःकाल में ('अपना हाथ जगन्नाथ' इस भावना से पुरुषार्थ के प्रतीक अपने) हाथों का दर्शन करे। (क्योंकि) कर-तल के अग्रभाग में लक्ष्मी का निवास है, कर (हाथ) के मध्य में सरस्वती का और कर के मूल में गोविन्द का निवास है। अर्थात् पुरुषार्थ या कर्त्तव्य-कर्म के मूल में सब प्रकार के धन-धान्य के दाता (गोविन्द) का ध्यान और कर्म के मध्य में ज्ञान-विज्ञान की देवी सरस्वती की साधना करने से परिणामस्वरूप सब प्रकार की समृद्धि प्राप्त होगी—यही तात्पर्य है ॥१॥

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले !
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

हे मातृभूमि देवता ! जिसकी रक्षा स्वयं विष्णु (पतिरूप) करते हैं। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। हे सागर रूपी परिधानों (वस्त्रों) और पर्वत रूपी वक्षःस्थल से शोभायमान धरती माता ! मुझे चरणों से स्पर्श के लिए क्षमा करो ॥२॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥३॥

ब्रह्मा, मुरारि (विष्णु) और त्रिपुर-नाशक शिव (अर्थात् तीनों देवता) तथा सूर्य, चन्द्रमा, भूमिपुत्र (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नवग्रह सभी मेरे प्रभात को शुभ एवं मंगलमय करें ॥३॥

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः
सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च ।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥४॥

(ब्रह्मा के मानसपुत्र, बाल-ऋषि) सनत्कुमार, सनक सनन्दन और सनातन तथा (सांख्य-दर्शन के प्रवर्त्तक कपिलमुनि के शिष्य) आसुरि एवं छन्दों का ज्ञान कराने वाले मुनि पिङ्गल मेरे इस प्रभात को मंगलमय करें। साथ ही (नाद-ब्रह्म के विवर्तरूप षट्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, निषाद और धैवत) ये सातों स्वर और (हमारी पृथ्वी से नीचे बसे) सातों रसातल मेरे लिए सुप्रभात करें ॥४॥

सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥५॥

सप्त समुद्र (अर्थात् भूमण्डल के लवणाब्धि, इक्षुसागर, सुरार्णव, आज्यसागर, दधिसमुद्र, क्षीरसागर और स्वादुजल रूपी सातों सलिल-तत्व), सप्त पर्वत (महेन्द्र, मलय, सह्याद्रि, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य और पारियात्र), सप्तऋषि (कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, गौतम, जमदग्नि, वशिष्ठ और विश्वामित्र), सातों द्वीप (जम्बू, प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर), सातों वन (दण्डकारण्य, खण्डारण्य, चम्पकारण्य, वेदारण्य, नैमिषारण्य और धर्मारण्य), भूलोक आदि सातों भुवन (भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्) सभी मेरे प्रभात को मंगलमय करें ॥५॥

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलनं च तेजः ।
नभः सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥६॥

अपने गुणरूपी गन्ध से युक्त पृथिवी रस से युक्त जल, स्पर्श से युक्त वायु, ज्वलनशील तेज, तथा शब्द रूपी गुण से युक्त आकाश महत्-तत्व बुद्धि) के साथ मेरे प्रभात को मंगलमय करें अर्थात् पाँचों तत्व बुद्धि-तत्व कल्याणकारी हों ॥६॥

महेन्द्रो मलयः सह्यो
देवतात्मा हिमालयः ।
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो
गिरिश्चारावलिस्तथा ॥७॥

महेन्द्र पर्वत (उड़ीसा प्रदेश में विद्यमान), मलयाचल (मैसूर के दक्षिण में चन्दन के वृक्षों से युक्त), सह्याद्रि (पश्चिमी घाट)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

देवतात्मा हिमालय (उत्तर दिशा में), रैवतक (द्वारका के समीप गिरनार), विन्ध्याचल (मध्य-प्रदेश में) तथा अरावलि पर्वत-श्रेणि (राजस्थान से दिल्ली तक) का ध्यान करना चाहिए ।।७।।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा सिन्धुश्च कावेरी यमुना च सरस्वती ।
रेवा महानदी गोदा ब्रह्मपुत्रः पुनातु माम् ।। ८ ।।

सिन्धु, गंगा, यमुना, सरस्वती, ब्रह्मपुत्र, रेवा (नर्वदा) महा-नदी, गोदावरी और कावेरी ये नौ नदियाँ मुझे पवित्र करें ।।८।।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।। ९ ।।

अयोध्या (भगवान राम की जन्मभूमि), मथुरा (श्रीकृष्ण की जन्मभूमि), माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवन्ती (उज्जयिनी = उज्जैन) और द्वारावती (द्वारका) नगरी ये सातों मोक्ष देने वाली हैं ।।९।।

प्रयागं पाटलीपुत्रं विजयानगरं पुरीम् ।
इन्द्रप्रस्थं गयां चैव प्रत्यूषे प्रत्यहं स्मरेत् ।।१०।।

प्रयाग, पाटलीपुत्र (पटना), विजयनगर, जगन्नाथपुरी, इन्द्र-प्रस्थ (दिल्ली), और गया—इनका प्रतिदिन प्रातःकाल में स्मरण करना चाहिए ।।१०।।

अरुन्धत्यनसूया च सावित्री जानकी सती ।
तेजस्विनी च पाञ्चाली वन्दनीया निरन्तरम् ।।११।।

सती अरुन्धती, (वशिष्ठ-पत्नी), सती अनसूया, सती सावित्री, (सत्यवान की पत्नी), सती सीता तथा प्रचण्ड तेज वाली पांचाली (द्रौपदी) की सदैव वन्दना करनी चाहिए ।।११।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लक्ष्मीरहल्या चन्नम्मा मीरा दुर्गावती तथा
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कण्णगी च महासाध्वी शारदा च निवेदिता ।।१२।।

(स्वतन्त्रता-सेनानी, झांसी की रानी) लक्ष्मी, अहल्याबाई (होल्कर), कर्नाटक की वीर महिला चन्नम्मा, परमभक्त मीराबाई, गढ़ मण्डल की रानी वीरांगना दुर्गावती, तमिलनाडु की विख्यात पतिव्रता कण्णगी, श्री रामकृष्ण परमहंस की धर्मपत्नी शारदा और भगिनी निवेदिता सदा ही वन्दना के योग्य हैं ।।१२।।

वैन्यं पृथुं हैहयमर्जुनं च
शाकुन्तलेयं भरतं नलं च ।
रामं च यो वै स्मरति प्रभाते
तस्यार्थलाभो विजयश्च हस्ते ।।१३।।

राजा वेन के पुत्र पृथु, हैहयवंशी कृतवीर्य के पुत्र अर्जुन, शकुन्तला के पुत्र भरत (जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भारत-वर्ष पड़ा है), राजा नल और मर्यादापुरुषोत्तम राम को प्रभात में जो कोई स्मरण करता है उसके हाथ में अर्थलाभ और विजय प्राप्त होते हैं ।।१३।।

दध्यङ् मनुर्भृगुरसौ हरिपूर्वचन्द्रो
भीष्मार्जुन-ध्रुव-वसिष्ठ-शुकादयश्च ।
प्रह्लाद-नारद-भगीरथ-विश्वकर्म-
वाल्मीकयोऽत्र चिरचिन्त्यशुभाभिधानाः ।।१४।।

अपनी हड्डियों को इन्द्र के वज्र के लिये दान कर देने वाले हुतात्मा ऋषि दधीच, मनु, भृगु, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, ब्रह्मचारी भीष्म, सव्यसाची और शब्दवेधी अर्जुन, परमभक्त ध्रुव, गुरु वशिष्ठ, परमहंस शुकदेव, भक्त प्रह्लाद, देवर्षि नारद, गंगा को पृथ्वी पर लाने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

वाले राजा भगीरथ, सब प्रकार के यन्त्रों और उपकरणों के निर्माता विश्वकर्मा और रामायणकार आदिकवि वाल्मीकि आदि के शुभ नामों का सदैव स्मरण किया जाना चाहिए ।।१४।।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ।।१५।।

गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा, दानवराज दानवीर बलि, महाभारत के महाकवि वेदव्यास, पवनपुत्र हनुमान, विभीषण कृपाचार्य और भगवान् परशुराम—ये सात चिरजीवी (अमर) हैं ।।१५।।

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युर्विवर्जितः ।।१६।।

इन सातों का सदा ही स्मरण करे और इनके अतिरिक्त आठवें मारकण्डेय ऋषि का भली प्रकार चिन्तन-स्मरण करे (तो) सभी प्रकार की अकाल-मृत्यु अथवा अपमृत्यु से सुरक्षित रहते हुए पूरे सौ वर्ष की समग्र एवं श्रेयस्कर आयु प्राप्त होती है ।।१६।।

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोको विदेहश्च पुण्यश्लोको जनार्दनः ।।१७।।

जिनका चरित्र और कीर्ति पाप को नष्ट करके पवित्रता (पुण्य) देने वाली है वे विदर्भराज राजा नल, धर्मराज युधिष्ठिर, ब्रह्मज्ञानी विदेह जनक तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण पुण्य कीर्ति है—पतितपावन हैं ।।१७।।

बुद्धो जिनेन्द्रो गोरक्षः शंकरश्च पतञ्जलिः ।
रामानुजोऽथ चैतन्यः कबीरो गुरुनानकः ।।१८।।

भगवान् बुद्ध, जिनेन्द्र महावीर स्वामी, गुरु गोरखनाथ, भगवान् पतञ्जलि (योगदर्शन के प्रवर्तक महर्षि), जगद्गुरु शंकराचार्य;

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

रामानुजाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, महात्मा कबीर और गुरु नानकदेव (हमें दैवी गुण प्रदान करें) ॥१८॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानेश्वरस्तुकारामः समर्थो मध्वबल्लभौ ।
नरसीस्तुलसीदासः कम्बः साधुकुलोत्तमाः ॥१९॥

सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त तुकाराम, समर्थ स्वामी रामदास, मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य, भक्तिशिरोमणि नरसी मेहता, गोस्वामी तुलसीदास, कम्बन् (तमिल-रामायण के रचयिता), ये सभी साधु-सन्तों में श्रेष्ठ महापुरुष (हमें सद्गुणों की दैवी सम्पदा, दिव्य स्वभाव प्रदान करें।) ॥१९॥

नायन्मारालवाराश्च तिरुवल्लवरस्तथा ।
वितरन्तु सदैवैते दैवीं मे गुणसम्पदम् ॥२०॥

वैष्णव नायन्मार और आलवार परम्परा के सन्त और तिरुवल्लवर आदि ये श्रेष्ठ साधु पुरुष सर्वदा मुझे दैवी सम्पदा प्रदान करें ॥२०॥

अगस्त्यः कम्बुकौण्डिन्यौ राजेन्द्रश्चोलभूषणः ।
सर्वे दिग्जयिनः ख्याताः शैलेन्द्रो बप्परावलः ॥२१॥

महर्षि अगस्त्य (दक्षिणापथ का उद्धार करने वाले तथा सुदूर पूर्व में 'बृहद्-भारत' के निर्माता), कम्बु, कौण्डिन्य, चोलवंशी राजेन्द्र, शैलेन्द्र और बप्पा रावल ये सभी (विजिगीषु वीर-पुरुष) अपनी दिग्विजयों के लिये विख्यात हैं ॥२१॥

चाणक्यश्चंद्रगुप्तश्च विक्रमः शालिवाहनः ।
अशोकः पुष्यमित्रश्च खारवेलः सुनीतिमान् ॥२२॥

महात्मा चाणक्य (कौटिल्य), सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य, (अवन्ती-गणराज्य के गण-प्रमुख शकारि) विक्रमादित्य, शालिवाहन प्रियदर्शी,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशोक महान्, शुङ्गवंश के संस्थापक सेनापति पुष्यमित्र तथा महान् नीतिज्ञ खारवेल ।।२२।।

हूणजेता यशोधर्मा समुद्रो गुप्तवंशजः ।
श्रीकृष्णदेवरायश्च प्रदाता हर्षवर्धनः ।।२३।।

मातृभूमि पर आक्रमण करने वाले हूणों को जीत लेने वाले महाराज यशोधर्मा शकों और हूणों की सत्ता को परास्त करने तथा उखाड़ फेंकने वाले सम्राट् समुद्रगुप्त विक्रमादित्य, श्री कृष्णदेवराय सर्वस्व दान करने वाले महादानी हर्षवर्धन ।।२३।।

साधु शंकरदेवश्च तथा सायणमाधवौ ।
प्रतापः शिवराजश्च गोविन्दो वसवेश्वरः ।।२४।।

असम के वैष्णव सन्त शंकरदेव, विजय नगर साम्राज्य के महामंत्री और महासेनापति तथा वेदों के भाष्यकार सायणाचार्य तथा वेदों की व्याख्या करने वाले माधवाचार्य, महाराणा प्रताप, महाराष्ट्र-केसरी छत्रपति शिवाजी, दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी तथा श्री वसवेश्वर ।।२४।।

रामकृष्णो दयानन्दो रवीन्द्रो राममोहनः ।
रामतीर्थोऽरविन्दश्च विवेकानन्द उद्यशाः ।।२५।।

पाखण्डखण्डिनी पताका फहराने वाले महर्षि दयानन्द, श्री रामकृष्ण परमहंस, परमयशस्वी स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, राजा राममोहनराय, विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महर्षि योगिराज अरविन्द (प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और योगी सन्त) ।।२५।।

तिलको रमणश्चैव सुधीर्नारायणो गुरुः ।
महामना मालवीयो महात्मा गान्धिरेव च ।।२६।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

('स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का जयघोष करने वाले) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महर्षि रमण, केरल के महान् सन्त नारायण गुरु, (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक) महामना मदनमोहन मालवीय और महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गान्धी ॥२६॥

केशवः संघनिर्माता हेडगेवारवंशजः ।
सन्ततं चिन्तयेदेतान् हिन्दुभूमिसुतोत्तमान् ॥२७॥

संघ (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के निर्माता आद्य सरसंघचालक हेडगेवार वंशोत्पन्न डा० केशवराय बलीराम आदि हिन्दुभूमि के इन श्रेष्ठ पुत्रों का सदैव चिन्तन करना चाहिए ॥२७॥

अनुक्ता ये भक्ता हरिचरणसंसक्तहृदया
अविज्ञाता वीरा अधिसमरमुद्ध्वस्तरिपवः ।
हुतात्मानः सन्तो भरतभुवि ये सन्ति च परे
नमस्तेभ्यो भूयादुषसि सकलेभ्यः प्रतिदिनम् ॥२८॥

इस प्रातः स्मरण में जिनका नाम नहीं लिया गया है—ऐसे भगवान् के चरणों में अपने अन्तःकरणों को लगाने वाले जो भक्त इस भारतभूमि में हुए हैं तथा वे अनेक अज्ञात महान् वीर जिन्होंने समर-भूमि में शत्रुओं का विनाश किया और मातृभूमि के लिये अपने जीवन की आहुति ही दे देने वाले जो अन्य वीर पुरुष और सन्त-महात्मा इस प्रिय स्वदेश में हुए हैं और अब भी विद्यमान हैं—उन सभी के लिये प्रतिदिन सबेरे-सबेरे (प्रभात में) हमारा नमस्कार हो ॥२८॥

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम् ।
ब्रह्मराजर्षि रत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ॥२९॥

बहुमूल्य रत्नों से भरा हुआ (रत्नाकर) समुद्र जिसके चरण धोता है, जिसके मस्तक पर हिमालय का मुकुट शोभायमान है तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो अपने अनेक ब्रह्मर्षि और राजर्षि रूपी पुत्र-रत्नों से समृद्धिशालिनी है, ऐसी भारतमाता की मैं वन्दना करता हूँ ।।२९।।

प्रातःस्मरणमेतद् यो
विदित्वादरतः पठेत् ।
स सम्यग् धर्मनिष्ठः स्यात्
संस्मृताखण्ड भारतः ।।३०।।

* भारतमाता की जय *

इस प्रातः स्मरण को जो व्यक्ति समझकर और आदरपूर्वक पाठ करेगा, वह अखण्ड भारत की स्मृति मन में सँजोये हुए अपने धर्म एवं कर्तव्य के प्रति सदैव निष्ठावान् और प्रामाणिक बना रहेगा ।।३०।।

* भारतमाता की जय *

वन्दना के इन स्वरों में, एक स्वर मेरा मिला लो
वन्दिनी माँ को न भूलो, राग में जब मत्त झूलो
अर्चना के रत्न कण में, एक कण मेरा मिला लो ।।
जब हृदय के तार बोले, शृंखला के बन्द खोले
चढ़ रहे हो शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो ।।

एक स्वर मेरा मिला लो !!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन - मन्त्र

ओ३म् यन्तु नद्यो वर्षन्तु पर्जन्याः । सुपिप्पला ओषधयो भवन्तु । अन्नवतामोदनवतामामिक्षवताम् । एषां राजा भूयासम् । ओदनमुद्ब्रुवते परमेष्ठी वा एषः यदोदनः । परमामेवैनं श्रियं गमयति ।।

—कृष्णयजुर्वेद

अर्थ—नदियाँ बहती रहें । (यथा समय) बादल बरसें । औषधियाँ अर्थात् सभी वनस्पति भली प्रकार फलों से युक्त हों । इन प्रचुर मात्रा में अन्न-धान्य वाले, ओदन (भात) वाले और दूध, दही और घी वाले लोगों का मैं राजा (रञ्जन करने वाला, प्रमुख) बनूँ । भोजन करने वाले के सामने परोसा हुआ यह भात (अन्न) स्वयं ब्रह्म (परमेश्वरस्वरूप) ही है । यही सेवन करने वाले व्यक्ति को उच्चतम सम्पदा, कान्ति और ऐश्वर्य प्राप्त करता है ।

ओ३म् मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा । सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।

—अथर्ववेद

भाई-भाई से द्वेष भावना न रखें । न ही कोई बहिन-बहिन से द्वेष करे । सभी समीचीन (यथोचित) आचरण करते हुए, सदाचार-व्रत का पालन करते हुए आपस में कल्याण करने वाली भद्र वाणी बोलें ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ।।

जो अपने आपको ईश्वरीय कार्य में ईश्वरीय प्रेरणा से लगा हुआ होने के कारण ईश्वर-(ब्रह्म) रूप मानकर ब्रह्मरूपी अग्नि में, ब्रह्मरूपी आहुति को, ब्रह्म के ही उद्‌देश्य से हवन करता आया है उसके ब्रह्म और सेवा और त्याग से युक्त यज्ञरूपी कर्म में कोई अन्तर नहीं है, वे एक ही हैं। ऐसी ब्रह्मनिष्ठ बुद्धि हो जाने के कारण वह स्वयं ही ब्रह्मपद को ही प्राप्त होगा।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।।
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

हम दोनों (गुरु और शिष्य, अपने धर्म, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान आदि की) साथ-साथ मिलकर रक्षा और अर्जन करें। हम दोनों साथ-साथ मिलकर अन्न आदि का भोग करें। हम मिलकर संगठित पराक्रम करें। हमारी साधना, अध्ययन और ज्ञान तेजस्वी हों, (दुर्बल नहीं)। हम कभी परस्पर द्वेष न करें।

हे परमेश्वर ! हमारे अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने राष्ट्र में तथा सम्पूर्ण विश्व में सर्वत्र शान्ति हो।

●●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् ।

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्

शस्यश्यामलां मातरम् ।

वन्दे मातरम् ॥

शुभ्रज्योत्स्नां पुलकितयामिनीम्

फुल्ल-कुसुमित-द्रुम-दल-शोभिनीम् ।

सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्,

सुखदां वरदां मातरम् ।

वन्दे मातरम् ॥

कोटि-कोटि कण्ठ-कल-कल-निनादकराले

द्विषष्टि कोटि भुजैर्धृत-खर-करवाले ।

के बोले मां तुमि अबले !

बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं

रिपुदलवारिणीं मातरम् ।

वन्दे मातरम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमि विद्या तुमि धर्म्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहु ते तुमि मां शक्ति
हृदये तुमि मां भक्ति
तोमारि प्रतिमा गड़ि, मन्दिरे मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वां
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलां
सुजलां सुफलां मातरम्।
वन्दे मातरम्।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां
धरणीं भरणीं मातरम्।
वन्दे मातरम् ॥

॥ भारतमाता की जय ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता का सार

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥१॥
देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥२॥
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥३॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥४॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोस्त्वकर्मणि ॥५॥
यद् यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥७॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥८॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥९॥

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥१०॥

विद्या विनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥११॥

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥१२॥

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥१३॥

युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१४॥

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
तत्तपस्यसि कौन्तेय ! तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥१५॥

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मय्यर्पित मनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१७॥

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१८॥

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥१९॥

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यं अहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥२०॥

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥२१॥

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥२२॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥२३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

सु भा षि त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूर्खैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खं शतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणा अपि ॥

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥

येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

सहसा विदधीत नं क्रियाम्,
अविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं
गुणलुब्धाः स्वमेव सम्पदः ॥

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः ।
विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन ।
दानेन पाणिर्न तु कंकणेन ।
विभाति कायः करुणापराणाम्
परोपकारैर्न तु चन्दनेन ॥

श्रम एव परो यज्ञः श्रम एव परं तपः ।
नास्ति किञ्चित् श्रमासाध्यं तेन श्रमपरो भव ॥

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता-
न्यम्बूनि दुग्धनलिनानि निषेवितानि ।
रे राजहंस ! वद तस्य सरोवरस्य
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः ॥

विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः ।
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम् ॥

नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्यसमं तपः ।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम् ॥

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मस्ततः सुखम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण के संकलित प्रसंग

मिथिला में धनुष-यज्ञ

वय किसोर सुषमा सदन, स्याम गौर सुखधाम ।
अंग अंग पर वारिअहिं, कोटि-कोटि सत काम ।।

कहहु सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ।।
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ।।
ए दोऊ दशरथ के ढोटा । बाल मरालन्हि के कल जोटा ।।
मुनि कौसिक मख के रखवारे । जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ।।
स्याम गात कल कंज विलोचन । जो मारीच सुभुज मदु मोचन ।।
कौसल्या सुत सो सुख खानी । नामु रामु धनु सायक पानी ।।
गौर किसोर वेषु वर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ।।
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ।।

बिप्रकाजु करि बन्धु दोउ, मग मुनिबधू उधारि ।
आए देखन चाप-मख, सुनि हरषीं सब नारि ।।
हिय हरषहिं बरसहिं सुमन, सुमुखि सुलोचनि वृन्द ।
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

गुरु विश्वामित्र की सेवा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउ भाइ।
गुर पद पंकज नाइ सिर, बैठे आयसु पाइ॥

निसि प्रवेश मुनि आयसु दीन्हा। सबही संध्यावन्दनु कीन्हा॥
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी॥
मुनिवर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई॥
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी॥
तेइ दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल पलोटत प्रीते॥
बार बार मुनि अग्या दीन्ही। रघुवर जाइ सयन तब कीन्ही॥
चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ॥

उठे लखनु निस विगत सुनि, अरुन सिखा धुनि कान।
पुर ते पहिलेहि जगतपति, जागे रामु सुजान॥

लक्ष्मण-मेघनाथ-युद्ध

आयसु माँगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ, बान सरासन हाथ॥

छतज नयन उर बाहु बिसाला। हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला॥
इहाँ दसानन सुभट पठाए। नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए॥
भूधर नख विटपायुध धारी। धाए कपि जय राम पुकारी॥
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी। इत उत जय इच्छा नहिं थोरी॥
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं। कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू। सीस तोरि गहि भुजा उपारू॥
असि रव पूरि रही नव खंडा। धावहि जहँ तहँ रुंड प्रचंडा॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा। कबहुँक बिसमय कबहुँ अनन्दा॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुधिर गाड़ भार भार जम्या, ऊपर धरि उड़ाइ।
जनु अंगार रासिन्ह पर, मृतक धूम रह्यो छाइ॥

लछिमन मेघनाद दोउ जोधा। भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा॥
एकहिं एक सकइ नहिं जीती। निसिचर छल बल करइ अनीती॥
क्रोधवंत तब भयउ अनंता। भंजेउ रथ सारथी तुरंता॥
रावन सुत निज मन अनुमाना। संकट भयउ हरिहि मम प्राना॥
वीरघातिनी छाड़िसि सांगी। तेजपुञ्ज लछिमन उर लागी॥
मुरुछा भई सक्ति के लागें। तब चलि गयउ निकट भय त्यागें॥

राम पदारबिंद सिर, नायउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन॥

राम का भ्रातृ-प्रेम

उहाँ राम लछिमनहिं निहारी। बोले वचन मनुज अनुसारी॥
अर्ध राति गइ कपिनहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ॥
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥
जौ जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू। पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू॥
सुत वित नारि भवन परिवारा। होंहि जाहिं जग वारहिं बारा॥
अस विचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न ज़गत सहोदर भ्राता॥
जथा पंखु बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिवर करहीना॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥
बहु विधि सोचत सोच विमोचन। स्रवत सलिल राजिवदल लोचन॥
उमा एक अखंड रघुराई। नरगति भगत कृपाल देखाई॥

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भये बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

राम राज्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुपति चरित देखि पुरवासी। पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी॥
राम राज बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥

बरनाश्रम निज निज धरम, निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहि सुखहि, नहिं भय सोक न रोग॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परमगति के अधिकारी॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुन्दर सब विरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥

राम राज नभगेस सुनु, सचराचर जग माँहि।
काल कर्म सुभाव गुन, कृत दुख काहुहि नाँहि॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Printed at —

Automatic Printing Press, Math